Self Respect

15-08-2014

- ✓बेहद का रूहानी बाप बेहद के रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं, अब यह बेहद का बाप और बेहद के बच्चे ही जानते हैं । और कोई न बेहद के बाप को जानते हैं, न बेहद के बच्चे अपने को मानते हैं । ब्रह्मा मुख वंशावली ही जानते और मानते हैं । और कोई तो मान भी नहीं सकेंगे ।
- ✓अभी तुम समझते हो बाप डायरेक्ट हम आत्माओं से बात करते हैं ।
- ✓अब तुम बच्चों ने समझा है तो अब पुरूषार्थ कर रहे हो बेगर टू प्रिन्स बनने का ।

- ✓यहाँ तुमको बेहद का बाप मिला है तो तुमको स्वर्ग से भी जास्ती खुशी होनी चाहिए ।
- ✓स्वतन्त्रता तो तुमको बाप दे रहे हैं । रावण की जेल से स्वतन्त्र कर रहे हैं । तुम जानते हो वहाँ हम बड़े स्वतन्त्र, बड़े धनवान होते हैं । किसकी नज़र भी नहीं पड़ती ।
- ✓अभी तुम पुरूषोत्तम संगमयुग पर हो । अभी सच्ची स्वतन्त्रता को पा रहे हो । वह तो स्वतन्त्रता को समझते ही नहीं । तो यह बात भी युक्ति से समझानी है । जिन्होंने कल्प पहले स्वतन्त्रता पाई है, वही मानेंगे । तुम समझाते हो तो कितना आरग्यु करते हैं, जैसे बुद्धु ।

✓तुम सब धर्म वालों को समझा सकते हो-तुम आत्मा हो, मुक्तिधाम से आये हो पार्ट बजाने । सुखधाम से फिर दुखधाम में तमोप्रधान दुनिया में आ गये हो । बाप कहते हैं तुम मेरी सन्तान हो, रावण की थोड़ेही हो । मैं तुमको राज्य- भाग्य देकर गया था । तुम अपने राज्य में कितने स्वतन्त्र थे । अब फिर वहाँ जाने के लिए पावन बनना है । तुम कितने धनवान बनते हो ।

✓अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |

✓वरदान: लाइट के आधार पर ज्ञान-योग की शक्तियों का प्रयोग करने वाले प्रयोगशाली आत्मा भव !